समास

डॉ. एस. एम. अहमद

आत्मीकरण

दो या अधिक शब्दों (पदों) का परस्पर संबंध बतानेवाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतंत्र या समस्त शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं।

समास में कम-से-कम दो पदों का योग होता है।
वे दो या अधिक पद एक पद हो जाते है: 'एकपदीभावः समासः'।
समास में समस्त होनेवाले पदों का विभक्ति या प्रत्यय लुप्त हो जाता है।

समास(Compound) की परिभाषा-

(1) अव्ययीभाव समास (Adverbial Compound)

(2) कर्मधारय समास (Appositional Compound)

(3) तत्पुरुष समास (Determinative Compound)

(4) द्वंद्व समास (Copulative Compound)

(5) द्विगु समास (Numeral Compound)

(6) बहुव्रीहि समास (Attributive Compound)

समास के भेद

$$\sqrt[6]{AKTD^2B} = ?$$

याद रखने का सूत्र

$\sqrt[6]{AKTD^{2}B}$ = समास

स्मरण संकेत

$$\sqrt[6]{AKTD^2B} = \text{समास}$$

(A) अव्ययीभाव समास (Adverbial Compound)

(K) कर्मधारय समास (Appositional Compound)

(T) तत्पुरुष समास (Determinative Compound)

(D1) द्वंद्व समास (Copulative Compound)

(D2) द्विगु समास (Numeral Compound)

(B) बहुव्रीहि समास (Attributive Compound)

स्मरण संकेत

अव्ययीभाव समास

इस समास में पहला या पूर्वपद अव्यय होता है और उसका अर्थ प्रधान होता है। अव्यय के संयोग से समस्तपद भी अव्यय बन जाता है। इसमें पूर्वपद प्रधान होता है।

अव्यय क्या होते हैं?

जिन शब्दों पर लिंग, कारक, काल आदि का कोई प्रभाव न पड़े अर्थात जो अपरिवर्तित रहें, वे शब्द अव्यय कहलाते हैं।

पूर्वपद-अव्यय	+	उत्तरपद	=	समस्त-पद	विग्रह
प्रति	+	दिन	=	प्रतिदिन	प्रत्येक दिन
आ	+	जन्म	=	आजन्म	जन्म से लेकर
यथा	+	संभव	=	यथासंभव	जैसा संभव हो
अनु	+	रूप	=	अनुरूप	रूप के योग्य
भर	+	पेट	=	भरपेट	पेट भर के
हाथ	+	हाथ	=	हाथोंहाथ	हाथ ही हाथ में

अव्ययीभाव समास के उदाहरण

कर्मधारय समास

कर्मधारय समास की परिभाषा

वह समास जिसका **पहला पद विशेषण** एवं दूसरा पद **विशेष्य** होता है अथवा पूर्वपद एवं उत्तरपद में उपमान – उपमेय का सम्बन्ध माना जाता है कर्मधारय समास कहलाता है।

इस समास का **उत्तरपद प्रधान** होता है एवं विगृह करते समय दोनों पदों के बीच में 'के सामान', 'है जो', 'रुपी' में से किसी एक शब्द का प्रयोग होता है।

समास पद	विग्रह
नवयुवक	नव है जो युवक
पीतांबर	पीत है जो अंबर
परमेश्वर	परम है जो ईश्वर
नीलकमल	नील है जो कमल
महात्मा	महान है जो आत्मा
कनकलता	कनक की सी लता
प्राणप्रिय	प्राणों के समान प्रिय

कर्मधारय समास के उदाहरण

कर्मधारय तत्पुरुष के भेद

कर्मधारय तत्पुरुष के चार भेद हैं-

1. विशेषणपूर्वपद (उदाः पीतांबर, परमेश्वर, प्रियसखा)
2. विशेष्यपूर्वपद (उदाः कुमारी)
3. विशेषणोभयपद (उदाः कहनी-अनकहनी, सुनी-अनसुनी)
4. विशेष्योभयपद (उदाः आम्रवृक्ष)

तत्पुरुष समास

जिस समास में बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
जैसे-

तुलसीकृत= तुलसी से कृत
शराहत= शर से आहत
राहखर्च= राह के लिए खर्च
राजा का कुमार= राजकुमार

तत्पुरुष समास में उत्तर पद प्रधान होता है।

3. तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास के छह भेद होते हैं-

(i) कर्म तत्पुरुष – चिड़ीमार, गगनचुंबी, यशप्राप्त

(ii) करण तत्पुरुष – आचारकुशल,तुलसीकृत, हस्तलिखित

(iii) संप्रदान तत्पुरुष – रसोईघर, विद्यालय, सभाभवन

(iv) अपादान तत्पुरुष – देशनिकाला, कामचोर, पापमुक्त

(v) संबंध तत्पुरुष – विद्याभ्यास, राजभवन, सेनापति

(vi) अधिकरण तत्पुरुष – गृहप्रवेश, नरोत्तम, लोकप्रिय

तत्पुरुष समास के भेद

द्विगु समास

जिस समस्त पद का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो, वह द्विगु समास कहलाता है।

समस्त पद	विग्रह
सप्ताह	सात दिनों का समाहार
सप्तसिंधु	सात सिंधुओं का समूह
दोपहर	दो पहरों का समूह
त्रिलोक	तीन लोकों का समाहार
तिरंगा	तीन रंगों का समूह
दुअन्नी	दो आनों का समाहार

4. द्विगु समास

द्वंद्व समास

जिस समास में समस्तपद के दोनों पद प्रधान हों या दोनों पद समान हों एवं दोंनों पदों को मिलाते समय ‘और’, ‘अथवा’, ‘या’, ‘एवं’ आदि योजक लुप्त हो जाएँ, वह समास द्वंद्व समास कहलाता है।

5. द्वंद्व समास

द्वंद्व समास के भेद

द्वंद्व समास के तीन भेद हैं-

1.इतरेतर द्वंद्व – ऋषि-मुनि, गाय-बैल

2.समाहार द्वंद्व – हाथ-पाँव, खाना-पीना

3.वैकल्पिक द्वंद्व – पाप-पुण्य, भला-बुरा

बहुव्रीहि समास

बहुव्रीहि समास ऐसा समास होता है जिसके समस्त्पदों में से कोई भी पद प्रधान नहीं होता एवं दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की और संकेत करते हैं वह समास बहुव्रीहि समास कहलाता है।

6. बहुव्रीहि समास

नीलकण्ठ - नीला है कण्ठ जिसका अर्थात् 'शिव'।

लम्बोदर - लम्बा है उदर जिसका अर्थात् 'गणेश'।

दशानन - दस हैं आनन जिसके अर्थात् 'रावण'।

महावीर - महान् वीर है जो अर्थात् 'हनुमान'।

चतुर्भुज - चार हैं भुजाएँ जिसकी अर्थात् 'विष्णु'।

पीताम्बर - पीत है अम्बर जिसका अर्थात् 'कृष्ण'।

निशाचर - निशा में विचरण करने वाला अर्थात् 'राक्षस'।

घनश्याम - घन के समान श्याम है जो अर्थात् 'कृष्ण'।

बहुव्रीहि समास के उदाहरण

अभ्यास पत्र (मूल्यांकन)

अव्ययी भाव-
प्रतिदिन
यथावसर आजन्म
आमरण
आजीवन
बेमन
बेरोजगार
रातोंरात
सपिरवार

तत्पुरुष-
जेबकतरा
वनगमन
हस्तलिखित
भयाकुल
स्नानघर
सत्याग्रह
विद्यालय
गुणहीन
चरित्रहीन
प्रदूषणरहित
भारतरत्न
घुड़सवार
कलानिपूण
वनवास

कर्मधारय -
महादेव
चरणकमल
नीलगगन
चंद्रमुख
महाराजा

द्विगु समास
तिरंगा
सतसई
शताब्दी
त्रिफला
दोपहर
चौराहा
पंचानन

द्वंद्व समास-
नर - नारी
राम - सीता
दादा-दादी
जन्म - मृत्यु
जीवन – मरण

बहुव्रीहि समास
प्रधानमंत्री
पंकज
निशाचरनिशा
मृगनयनी

द्विगु समास
दोपहर
शताब्दी
अष्टाध्यायी
पंचवटी
पंचतत्त्व
सप्तद्वीप

Dr. Ahmed hindiacadamy@gmail.com
9989391942

सृजन

1) सौंदर्य सृजन – चार्ट, मॉडल, फ्लैश कार्ड
2) साहित्यिक सृजन – विज्ञापन, संवाद, अनुच्छेद, कहानी
3) शैक्षिक सृजन – नवीन शिक्षण विधियाँ
4) तकनीकी सृजन – पी.पी.टी., ग्राफिक्स, एनिमेशन, वीडियो,

D Ahmed hindiacadamy@gmail.com
9989391942

सृजन

5) कलात्मक सृजन – नृत्य, भाषण, अभिनय, खेल
6) सांगितिक सृजन – गीत, धुन विकसित करना
7) वैज्ञानिक सृजन – नवीन आविष्कार
8) औद्योगिक सृजन – नवीन उद्योग

D Ahmed hindiacadamy@gmail.com
9989391942

MADHUBUN®

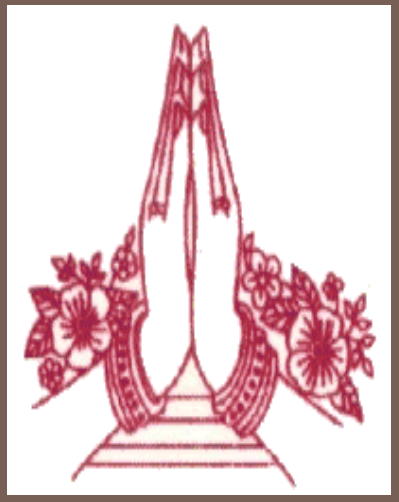

इस विषय पर विषय विकास हेतु अपनी प्रतिपुष्टि एवं सूचनाएँ नीचे दिए गए ई-मेल पते पर भेजने की कृपा करें।

Dr. Ahmed hindiacadamy@gmail.com
9989391942